।।ॐ श्रीगणेशाय नमः।।

कालसर्पयोगशान्तिविधिः

संकलनकर्ता

स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर
वार्ड नं 2, डाकः कैलास गेट, मुनि की रेती, ऋषीकेश,
तहः नरेन्द्रनगर, जिलाः टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड 249137.
चल दूरभाष् : 9557130251, www.satyamsadhana.org

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।ॐ श्रीगणेशाय नमः।।

कालसर्पयोगशान्तिविधिः

संकलनकर्ता

स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर

वार्ड नं 2, डाकः कैलास गेट, मुनि की रेती, ऋषीकेश,

तहः नरेन्द्रनगर, जिलाः टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड 249137.

चल दूरभाष् : 9557130251, www.satyamsadhana.org

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रन्थनामः-**कालसर्पयोगशान्तिविधिः**

प्रकाशक :- **श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,** ऋषीकेश.

© **सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन**

प्रथम संस्करण : रविवार, 21 जुलाई 2024,
आषाढ पूर्णिमा संवत् 2081.

प्रतियां : 100 (एकसौ)

प्रधान सम्पादक : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

अक्षर संयोजन : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती.

पुस्तक प्राप्ति स्थान-

श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,

वार्ड नं 2, डाकः कैलास गेट, मुनि की रेती, ऋषीकेश,

तहः नरेन्द्रनगर, जिलाः टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड 249137.

दूरभाष संख्याः- 91-9557130251,

ईपत्र-swsdsr@gmail.com

web: www.satyamsadhana.org

सहयोग राशि : 50/=

मुद्रक : सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ

कालसर्पयोगशान्तिविधिः-

स्थान विचारः "शान्तिरत्न" नामकग्रन्थ में कहा है कि कालसर्पयोगशान्ति को नदी के तट पर स्थित अथवा श्मशानस्थ अथवा किसी भी शिव मन्दिर में ही करना चाहिये। पण्डितजी अपने घर में, यजमान के घर में अथवा अन्यत्र (शिवमन्दिर से भिन्न देवी मन्दिर आदि) कहीं भी करते कराते हैं तो वह उचित नहीं है।

मुहूर्तविचारः "शान्तिमयूख" नामकग्रन्थ में कहा है कि 'राहुदोषं बुधो हन्यात्' - अतः बुधवार का दिन, वह भी कृष्णपक्षीय हो तो श्रेष्ठ है। अतः कृष्णपक्षीय प्रथम बुधवार को राहुग्रह के वैदिकमंत्र का बयान्बे हजार (92000) जप करने हेतु संकल्प दें। तत्पश्चात् कृष्णपक्षीय दूसरे बुधवार के दिन इन 16 नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हो तो शान्ति पूजा-होम करायें। वे नक्षत्र इस प्रकार हैं - अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, मूल, ज्येष्ठा, पुष्य, आश्लेषा, मघा, दो उत्तरा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा। त्याज्य नक्षत्र - द्विपुष्करयोगयुक्त, पंचकयुक्त और त्रिपादीय। सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण काल श्रेष्ठ है। बुधवासरीय अमावास्या आश्लेषा युक्त हो तो सर्वश्रेष्ठ है। यजमान के घात नक्षत्र और राशि पर जरूर विचार कर लें। रिक्ता तिथि वर्ज्य है।

उक्त मुहूर्त में यदि किसी कारणवश यजमान सपत्नीक उपस्थित न हो सके, तो यजमान के घात रहित उक्त समुचित नक्षत्र एवं तिथि से युक्त सोम वार अथवा शनिवार के दिन में भी आरम्भ एवं समापन किया जा सकता है।

सामग्री - रोलि 100 ग्रा, मोलि 1 गोला, सुपारी 1कि, लौंग 25 ग्रा, इलायची छोटि 50 ग्रा, पानपत्ते 50 नग, फल 5 दर्जन, फूल खुले 1कि, फूलमाला 5, गुलाल 100ग्रा, इत्र 1 छोटिशीशी, धूप 100ग्रा, घी 2कि, दहि 1कि, शक्कर 1कि, चावल 1कि, आटा 250 ग्रा, हल्दी 100 ग्रा, पीली सरसों 100ग्रा, साबूत उडद 500ग्रा, नारियल कच्चा 2, नारियल के गोला 1, पंचमेवा 1कि,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुई 100ग्रा, यज्ञोपवीत 24, पंचरत्न 2पैकेट, सर्वौषधी 100ग्रा, बडा दीपक 1, छोटे दीपक 24, चहुमुखी दीपक 1, तांबे के सर्प 9, चांदी का सर्प (सोने का टीका से आंखें बनायें) 18, कलशपात्र (तांबे का ढक्कन सहित) 5, कांसे का कटोरा (मध्यम साईज) 9, सोने का टुकडा 2, पूर्णपात्र 1, आज्यस्थाली (कांसे का) 1, लालवस्त्र 1मी, सफेद वस्त्र 2मी, कालावस्त्र 1मी, पीलावस्त्र 1मी, साडी (ब्लौज पीस सहित) 1, धोती (कुर्ता पीस सहित) 1, आंवले का मुरब्बा 12नग, अदरक 250ग्रा, मुनक्का 100ग्रा, मिठाई 3कि, दोने 100नग, पत्तल 25, दूर्वा थोडा, कुशा थोडा, चौराहे का मिट्टी थोडा, काला तिल 3कि, जौ 1कि, गुग्गुल 100ग्रा, अगरबत्ति का पैकेट 3, गंगाजी की रेता (अथवा कोई भी पवित्र मिट्टि) 1बाल्टि, पंच पल्लव – आम, पीपल, वट, गूलर और जामून (प्रत्येक थोड़ा), हवन सामग्री पैकेट 2कि, हवन की समिधा – दूर्वा, कुशा, आक, ढाक, खैर, गूलर, अपामार्ग, पीपल और शमी (यथाशक्ति प्रत्येक), आम का लकडी 40कि, काले/नीले पुष्प 50ग्रा, काले रंग 50ग्रा, चन्दन चूर्ण 100ग्रा, कपूर 100ग्रा, बिल्वपत्र थोडा, गुड 1कि, कम्बल 1नग, पंचगव्य थोडा, साबूत मूंग 1कि, मसूर कि दाल 1कि, अष्टगन्ध 1पैकेट और छूटी रेजगारी 100 रु। नान्दी श्राद्ध हेतु पृथक् सामग्री तैयार कर लें। (यदि यजमान के घर में लगातार मृत्यु हो रहे हों तो त्रिपिण्डी श्राद्ध भी साथ में करें तथा यदि दोषवशात् पुत्र प्राप्त न हो रहा हो तो नाग-नारायण बलि भी साथ में करें। उनकी सामग्री अलग तैयार कर लें।)

विधिः- सपत्नीकयजमान आचार्यादयश्च स्नात्वा अहत (धौत=शुद्ध) वाससा परिधाय शुद्धासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वोपविश्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य आचमनं, प्राणायामः, शरीरसामग्र्योः शुद्धिः, आसनशुद्धिः, भूशुद्धिः, दीप पूजा, घण्टापूजनपूर्वक घण्टानादः, शंखपूजनं, शान्तिसूक्तपाठः । ततः

संकल्पः - ऊँ विष्णुः.....(अन्ते अर्चकस्य गोत्रादिकथनपूर्वकं तृतीयान्तेन नामकथनपूर्वकं यजमानस्य गोत्रादिकथनपूर्वकं प्रथमान्तेन नाम उक्त्वा) मम जन्मकुण्डल्यां राहुकेतुसंज्ञकक्रूरग्रहयोः स्थितिवशादुत्पन्न.....नामककाल-सर्पयोगदोषेण कुले, शरीरे, व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च विघ्नानां

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रशमनार्थं, मम आध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविक तापत्रयनिवारणार्थं भौम्यान्तरिक्षदिव्यमहोत्पातागामीसंचितसूचितदुष्टानिष्टदोषपरिहारार्थं सर्वरोगनिवारणार्थं, विशेषेण स्वकीयैः परकीयैः स्वग्रामस्थैरन्यैर्वा कृतक्रियमाण कारयिष्यमाणदुष्टयंत्रमंत्रतंत्रविषशल्यौषधप्रतिमास्थापनादि- सर्वाभिचारकम ंघातकर्मफणिहवनश्येनयजनदुर्निरीक्षणदुर्दैवतोपासनादि क्षुद्रकर्मजन्यदोष परिहारार्थं, अलक्ष्मीपरिहारार्थं, पुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिपूर्वकसौख्यार्थं (अपुत्रश्चेत्पुत्र प्राप्त्यर्थं), मनो कामनापूर्त्यर्थं सग्रहमखां कालसर्पयोगशान्त्यर्थं स्वस्तिपुण्याह वाचनं मातृकापूजनं नवग्रहपूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यवरणादिकार्ये आदौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

विशेषसंकल्पः- ॐ कया नश्चित्र इति मंत्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्रीछन्दः, राहुदेवता, कयान इति बीजं, शचिरिति शक्तिः, अधिदेवताकालप्रत्यधिदेवता सर्पसहितराहुप्रीत्यर्थं न्यासे पूजने च विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः - वामदेव ऋषये नमः शिरसि, गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे, राहुदेवतायै नमः हृदये, कया इति बीजाय नमः गुह्ये, शचिरिति शक्तये नमः पादयोः, साङ्गराहुदेवताप्रीत्यर्थे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अथ करन्यासः - कया नश्चित्र इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः, आभुवदूतीति तर्जनीभ्यां नमः, सदा वृधः मध्यमाभ्यां नमः, सखा कया अनामिकाभ्यां नमः, शचिष्ठया कनिष्ठिकाभ्यां नमः, वृता करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यासः - कया नश्चित्र इति हृदयाय नमः, आभुवदूतीति शिरसे स्वाहाः, सदा वृधः इति शिखायै वषट्, सखा कया इति नेत्रत्रयाय वौषट्, शचिष्ठया इति कवचाय हुम्, वृता इति अस्त्राय फट्।

अथ पदन्यासः - कया इति शिरसि, नः इति ललाटे, चित्र इति मुखे, आभुवदिति हृदये, ऊतीति नाभौ, सदा इति जठरे, वृध इति कट्यां, सखा इत्यूर्वोः, कया इति जान्वोः, शचिरिति गुल्फयोः, तया इति पार्श्वयोः, वृता इति पादयोः।

अथ बीजन्यासः - ऊँ ऊँ हृदयाय नमः, ऊँ भ्रां शिरसे स्वाहा, ऊँ भ्रीं शिखायै वषट्, ऊँ भ्रौं कवचाय हुम्, ऊँ सः अस्त्राय फट्। इति पंचन्यासैः 'देवो भूत्वा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवान् यजेत्' इति श्रुत्यनुसारेण स्वस्मिन् राहुदेवताभावं कल्पयित्वा गणेशाम्बिकापूजनपूर्वककलषस्थापनं कृत्वा रक्षोघ्नसूक्तं पठित्वा पंचाङ्गवेदिस्थसर्वदेवादीनां पूजयित्वा अर्थात् ऊँ, श्रीं, स्वस्तिकं, सप्तघृतमातृकां, षोडशमातृकां, नवग्रहं, वास्तुं, क्षेत्रपालं च पूजयित्वा नान्दीश्राद्धं कुर्यात्। तत्पश्चात् शिव पंचायतनं पूजयेत् (न शिवपरिवारं)। यदि शिवपंचायतनोपेतमंदिरं नास्ति चेत् तर्हि पंचांगवेद्याः पश्चिमे दक्षिणे वा एकस्मिन् पीठे शिवलिंगादिमूर्तीन् स्थापयेत् पूगीफले वा आवाहयेत्।

1.पंचांगवेदी **2. शिवपंचायतनम्** **3. कालराहुसर्पायतनम्**

पूर्व

कलशादि पंचांग देवताः	उत्तर	विष्णु सूर्य शिव दुर्गा गणेश	दक्षिण	काल स्थापना	राहु स्थापना	नवनागवेदी स्थापना

पश्चिम

1. गणेशस्यावाहनं- हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज, सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः।1। नागास्य नागहार त्वं गणनाथ चतुर्भुज। भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाषाङ्कुशपरश्वधैः।2। आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः। इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।3। ऊँ गणानान्त्वा....4। ऊँ भूर्भुवःस्वः गणपतिं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। (श्वेतपुष्पश्वेताक्षतदूर्वाङ्कुरैः स्थापयेत्)

अथ ध्यानं-

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पलं
व्रीह्यग्रस्वर्विषाणरत्नकलशप्रद्योत्करास्भोरुहं।
ध्याये वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया।
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरं विघ्नेशमिष्टार्थदं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ प्रार्थना-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।1।

वक्रतुण्डमहाकाय सूर्यकोटिसमप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।2।
ततः पुष्पार्चनं कुर्यात्।

2. अथ <u>दुर्गाया आवाहनं</u>- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।1। तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां नाशयते तमः।2। महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे। सर्वभूतहिते मातः एह्येहि परमेश्वरी।3। देवेशी भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते । यावत्त्वं पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरो भव।4। ऊँ भूर्भुवःस्वः दुर्गां आ0 स्था0 पू0 (रक्तपुष्परक्ताक्षतैः स्थापयेत्)।

अथ ध्यानं- हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभां। पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।। त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे। ध्याये दुर्गां ब्रह्म सुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरं।।

अथ प्रार्थना- यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता। दुर्गात्संत्रायते यस्माद्देवी दुर्गेति कथ्यते।। तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीं। प्रपद्ये शरणं देवीं दुं दुर्गे दुरितं हरः।। पुष्पार्चनं कुर्यात्।

3. अथ विष्णोरावाहनं- ऊँ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवमसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।1। शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गं। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथं।2। मेघश्यामं पीत कौशेयवासं श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गं। पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथं ।3। ऊँ भूर्भुवःस्वः विष्णुं आ0 स्था0 पू0, (पीतपुष्पपीताक्षतैः स्थापयेत्)।

अथ ध्यानं- ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती नारायण सरसिजासनसन्निविष्टं। केयूरमकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुः धृतशङ्खचक्रः।1।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ प्रार्थना-

क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकते मौक्तिकानाम्।
मालाक्लृप्तासनस्थस्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः।1।
शुभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितै र्मुक्तिपीयूषवर्षैः।
आनन्दी नः पुनियादरिनलिनगदाशङ्खपाणिर्मुकुन्दः।2।

-पुष्पार्चनं कुर्यात्।

4. अथ सूर्यस्य आवाहनं- आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्मयेन सविता रथेनादेवो भुवनानि पश्यन्। अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं। कद्रुद्रादाय प्रचेतसे मीढुष्टमायतव्यसे। वोचेम शन्तमं हृदे। ऊँ भूर्भुवःस्वः सूर्यं आ0 स्था0 पू0 (रक्तपुष्परक्ताक्षतैः स्थापयेत्)।

अथ ध्यानं- ध्यायेत्सूर्यमनन्तकोटिकिरणं तेजोमयं भास्करं, भक्तानामभयप्रदं दिनकरं ज्योतिर्मयं शंकरं। आदित्यं जगदीशमच्युतमजं त्रैलोक्यचूडामणिं, भक्ताभीष्टवरप्रदं दिनमणिं मार्ताण्डमाद्यं शुभं।।

अथ प्रार्थना- जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिं। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरं।1। ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थान संभूतां पीडां हरतु मे हरिः।2। पुष्पार्चनं कुर्यात्।

5. अथ शिवस्य आवाहनं- नमस्ते रुद्रमन्यवेऽउतोतेऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।1। नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।2। ऊँ भूर्भुवःस्वः शिवं आ0 स्था0 पू0 (पुष्पाक्षतैः स्थापयेत्)।

अथ ध्यानं-ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं। रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं। विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।।

अथ प्रार्थना- भीतिर्नैव भुजंगपुंगवविषात् प्रीतिर्नैव चन्द्रामृतात्। नाशौचं गले रुण्डमाललुलनान्न शौचं गंगाजलात्।। नोद्वेगश्चितिभस्मनो न च सुखं गौरीस्तनालिङ्नात्। स्वात्मारामतया हिताहितसम स्वस्थो हर पातु वः।। पुष्पार्चनं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृत्वा **पुनः प्रार्थयेत्** - आगता ये सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिराः समे। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्तिष्ठन्तु सन्निधौ।। ऊँ शिवविष्णुगणेशसूर्यदुर्गाभ्यो नमः। पुष्पाणि समर्प्य षोडशोपचारैः पूजयेत्।

ततः राहुकालसर्पदेवतानां पंचांगवेद्याः पश्चिमे दक्षिणे वा पृथक्-पृथक् स्थापयेत्। (राहु, काल और सर्प का पूजन में नीले/काले रंग के फूल, नीले/काले अक्षत, लाक्षाधूप, घृतदीप, माषनैवेद्य, अगरु, चन्दन, कुंकुम और काले वस्त्र का ही प्रयोग करें)। **तत्र पूगीफले प्रतिमायां वा राहुं स्थापयेत्। तत्र प्रथमं -**

अथ राहुध्यानं- 'नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली। चतुर्भुजः शक्तियुतश्च राहुः सिंहासनस्थो वरदोऽस्तु मह्यं॥' बर्बरदेशोत्पन्नाय कायवर्जिताय सिंहासनाय वरप्रदाय पौर्णमासीदिने भरणीनक्षत्रसंजाताय शूद्रवर्णाय हुताग्निरूपिणे करालवदनाय श्रेष्ठकापालरूपायांजनप्रभाय पैठिनसगोत्राय रोदनवदनाय काल-सर्पाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय राहवे नमः।

अथ राहुस्थापनं- ऊँ कया नश्चित्राऽआभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्टया वृता।। ऊँ भूर्भुवःस्वः भो राहो इह आगच्छ, सुप्रतिष्ठितो भव, सुप्रसन्नो भव, सम्मुखो भव, वरदो भव।। अथ पूगीफले प्रतिमायां वा राहोरुत्तरदिग्भागे कालं स्थापयेत्।

अथ काल ध्यानं -

'एह्येहि दंडायुधधर्मराज कालांजनाभास विशालनेत्र। विशालवक्षस्स्थलरुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।1। चित्रगुप्तादिसंयुक्तदण्डमुद्गरधारक। आगच्छ भगवन् काल पूजार्थं सन्निधो भव।2। कालाय कालरूपाय कालांजनसमप्रभो। दक्षिणस्यां कृतावास कालदेव नमोऽस्तुते।3।

अथ काल स्थापनं - ऊँ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरगमत् समोषधीभिरोषधीः।। ऊँ भूर्भुवःस्वः भो काल इह आगच्छ, सुप्रतिष्ठितो भव, सुप्रसन्नो भव, सम्मुखो भव, वरदो भव।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ सर्वेषां सर्पाणां राहोर्दक्षिणदिग्भागे सामान्येनावाहनं -

तत्र सर्वसर्पध्यानं -

एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वंदितपादपद्म । नानाफणामंडलराजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।1। आशीविषयसमोपेत नागकन्या विराजित आगच्छ नागराजेन्द्रात्र देशे सन्निधो भव।2।

अथ सर्वसर्प आवाहनं- 'नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ऊँ भूर्भुवःस्वः भो सर्पा इह आगच्छन्तु, सुप्रतिष्ठिता भवन्तु, सुप्रसन्ना भवन्तु, सम्मुखा भवन्तु, वरदा भवन्तु।। आहूतानां राहु कालसर्पाणां पुष्पार्चनं कुर्यात्। तत्रादौ

अथ राहोः पुष्पार्चनं- ऊँ विधुन्तुदाय नमः, ऊँ सदाकालाय नमः, ऊँ कालाय नमः, ऊँ करालवदनाय नमः, ऊँ अंताय नमः, ऊँ राहवे नमः।

अथ कालस्य पुष्पार्चनं- ऊँ यमाय नमः, ऊँ धर्मराजाय नमः, ऊँ मृत्यवे नमः, ऊँ अन्तकाय नमः, ऊँ वैवस्वताय नमः, ऊँ कालाय नमः, ऊँ सर्वभूतक्षयाय नमः, ऊँ औदुम्बराय नमः, ऊँ दध्नाय नमः, ऊँ नीलाय नमः, ऊँ परमेष्ठिने नमः, ऊँ वृकोदराय नमः, ऊँ चित्राय नमः, ऊँ चित्रगुप्ताय नमः।

अथ सर्वसर्पाणां पुष्पार्चनं- ऊँ अनन्ताय नमः, ऊँ शेषनागाय नमः, ऊँ वासुकये नमः, ऊँ शंखाय नमः, ऊँ पद्माय नमः, ऊँ कम्बलाय नमः, ऊँ कर्कोटकाय नमः, ऊँ अश्वतराय नमः, ऊँ धृतराष्ट्राय नमः, ऊँ शंखपालाय नमः, ऊँ तक्षकाय नमः, ऊँ कालियाय नमः, ऊँ कपिलाय नमः, ऊँ कुलिकाय नमः, ऊँ महापद्माय नमः, ऊँ शंखचूडाय नमः, ऊँ घातकाय नमः, ऊँ विषधराय नमः। ततः तेषां सर्पाणां विशेषरूपेण शिवपंचायतनवेद्याः पश्चिमे दक्षिणे वा नवनागवेद्यां पृथक्-पृथक् स्थापयेत्।

अथ नवनागवेदीपीठपूजाः- ऊँ आधारशक्त्यै नमः, ऊँ मूलप्रकृत्यै नमः, ऊँ आदिकूर्माय नमः, ऊँ अनन्ताय नमः, ऊँ पृथिव्यै नमः (पुष्पार्चनं कुर्यात्)।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीठपादमूलपूजा- ऊँ धर्माय नमः (पूर्वे), ऊँ अधर्माय नमः (आग्नेये), ऊँ ज्ञानाय नमः (दक्षिणे), ऊँ अज्ञानाय नमः (नैऋत्ये), ऊँ वैराग्याय नमः (पश्चिमे), ऊँ अवैराग्याय नमः (वायव्ये), ऊँ ऐश्वर्याय नमः (उत्तरे), ऊँ अनैश्वर्याय नमः (ऐशान्ये)-(पूर्ववत् पुष्पार्चनं कुर्यात्, एवमग्रेऽपि)।

अथ प्रथमावरणपूजाः- (प्रत्येक आवरण में उक्त क्रम से पूर्वादि दिशा में पुष्पार्पण द्वारा तत्तद्देवतादि का आवाहन करें) ऊँ सनत्कुमाराय नमः, ऊँ स्कन्धाय नमः, ऊँ बाणाय नमः, ऊँ हेमचूडाय नमः, ऊँ भद्रसेनाय नमः, ऊँ भवपुत्राय नमः, ऊँ देवसेनाय नमः, ऊँ देवयानाय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं प्रथमावरणार्चनं, प्रथमावरणदेवताः प्रीयतां नमः।

अथ द्वितीयावरणपूजाः- ऊँ आदिकालाय नमः, ऊँ महाकालाय नमः, ऊँ गौरकालाय नमः, ऊँ शक्तिकालाय नमः, ऊँ कालाय नमः, ऊँ कालदुर्दराय नमः, ऊँ कालभैमाय नमः, ऊँ कालाधिष्ठात्रे नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं द्वितीयावरणार्चनं, द्वितीयावरणदेवताः प्रीयतां नमः।

अथ तृतीयावरणपूजाः- ऊँ इन्द्रय नमः, ऊँ अग्नये नमः, ऊँ यमाय नमः, ऊँ निऋतये नमः, ऊँ वरुणाय नमः, ऊँ वायवे नमः, ऊँ कुबेराय नमः, ऊँ ईशानाय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं तृतीयावरणार्चनं, तृतीसावरणदेवताः प्रीयतां नमः।

अथ चतुर्थावरणपूजाः- ऊँ वज्रायुधाय नमः, ऊँ शक्त्यायुधाय नमः, ऊँ दण्डायुधाय नमः, ऊँ खड्गायुधाय नमः, ऊँ पाशायुधाय नमः, ऊँ अंकुशायुधाय नमः, ऊँ पद्मायुधाय नमः, ऊँ त्रिशूलायुधाय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं चतुर्थावरणार्चनं, चतुर्थावरणदेवताः प्रीयतां नमः।

अथ पंचमावरणपूजाः- ऊँ धरणीधराय नमः, ऊँ फणधराय नमः, ऊँ जलधराय नमः, ऊँ वक्रगतिने नमः, ऊँ रौद्राय नमः, ऊँ श्रीधरधारिणे नमः, ऊँ मुख्यफल हारिणे नमः, ऊँ कालनेत्राय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं पंचमावरणार्चनं, पंचमावरणदेवताः प्रीयतां नमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ षष्ठावरणपूजाः- ऊँ वीरभद्रय नमः, ऊँ सहजाय नमः, ऊँ सावित्र्याय नमः, ऊँ वारुणकुमाराय नमः, ऊँ क्षेत्राय नमः, ऊँ कपिलाय नमः, ऊँ भैरवाय नमः, ऊँ मुद्रिकाय नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं षष्ठावरणार्चनं, षष्ठावरण देवताः प्रीयतां नमः।

अथ सप्तमावरणपूजाः- ऊँ सुविघ्ननिवारणाय नमः, ऊँ रूपकालाय नमः, ऊँ सूर्यकालाय नमः, ऊँ क्षयकालाय नमः, ऊँ अन्तकाय नमः, ऊँ नीलकण्ठाय नमः, ऊँ काश्यपाय नमः, ऊँ तार्क्ष्यशत्रवे नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं सप्तमावरणार्चनं, सप्तमावरणदेवताः प्रीयतां नमः।

अथ अष्टमावरणपूजाः- ऊँ दिव्यायै नमः, ऊँ सुष्मायै नमः, ऊँ रुजायै नमः, ऊँ रुद्राण्यै नमः, ऊँ खेचरायै नमः, ऊँ खेमलायै नमः, ऊँ भद्रायै नमः, ऊँ सर्वतोमुख्यै नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं अष्टमावरणार्चनं, अष्टमावरण-देवताः प्रीयतां नमः।

अथ नवमावरणपूजाः- ऊँ गुरवे नमः, ऊँ परमगुरवे नमः, ऊँ परात्परगुरवे नमः, ऊँ परमेष्ठिगुरवे नमः, ऊँ हारकेश्वराय नमः, ऊँ दयाब्धये नमः, ऊँ अब्धिनिवासिने नमः, ऊँ क्षीरसागरक्षोभिणे नमः। भक्त्या समर्पये युष्मभ्यं नवमावरणार्चनं, नवमावरणदेवताः प्रीयतां नमः।

अथ अष्टद्वारंपालपूजाः- ऊँ वीर सेनाय नमः, ऊँ महासेनाय नमः, ऊँ सुषेणाय नमः, ऊँ भद्रसेनाय नमः, ऊँ चारुसेनाय नमः, ऊँ बलसेनाय नमः, ऊँ पूर्णसेनाय नमः, ऊँ चित्रसेनाय नमः।

अथ सर्पाणां स्थापनं- (मध्ये) कलशस्थापनं कृत्वा कलशोपरि कृष्णाक्षतैः संपूरिततामृतस्तरीं संस्थाप्य तन्मध्ये ताम्रसर्पमेकं स्थाप्य तदुपरि कांस्यपात्रे रजतसर्पद्वयं स्थापनीयं, तयोः रजतसर्पद्वयोः सपत्नीकप्रधाननागदेवतावाहनं कुर्यात्-'अनन्तं विप्रवर्ग च तथा कुंकुमवर्णकम्। फणसहस्रसंयुक्तं तं देवं प्रणमाम्यहम्।।' ऊँ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। (पूर्वादिषु अष्टसु दिक्षु कलशोपरि अथवा कलशं विना वेद्यामेव कृष्णाक्षतेषूपरि ताम्रसर्प स्थापयित्वा, तदुपरि कांस्यपात्रे रजतसर्पद्वयं स्थापनीयं)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(पूर्वे)'क्षत्रवर्ग पीतवर्ण फणैः सप्तशतैर्युतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च वासुकिं प्रणमाम्यहम्।।' ऊँ वासुकये नमः, वासुकिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

(आग्नेय्यां)'शूद्रवर्ग श्वेतवर्ण शतत्रयफणायुतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च कर्कोटं च नमाम्यहम्।।' ऊँ कर्कोटमा0 स्था0 पू0।

(दक्षिणे)'वैश्यवर्ग नीलवर्ण फणैः पंचशतैर्युतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च तक्षकं प्रणमाम्यहम्।।' ऊँ तक्षकाय नमः, तक्षकमा0 स्था0 पू0।

(नैर्ऋत्यां)'शंखपालं क्षत्रियं च पीतं सप्तशतैः फणैः। युक्तमुत्तुंगकायं च शिरसा प्रणमाम्यहम्।।' ऊँ शंखपालाय नमः, शंखपालमा0 स्था0 पू0।

(पश्चिमे)' वैश्यवर्ग नीलवर्ण फणैः पंचशतैर्युतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च महापद्मं नमाम्यहम्।।' ऊँ महापद्माय नमः, महापद्ममा0 स्था0 पू0।

(वायव्यां)' वैश्यवर्ग नीलवर्ण फणैः पंचशतैर्युतम्। युक्तमुत्तुंगकायं च तन्नीलं प्रणमाम्यहम्।।' ऊँ नीलाय नमः, नीलमा0 स्था0 पू0।

(उत्तरे)' कम्बलं शूद्रवर्ग च शतत्रयफणैर्युतम्। आवाहयामि नागेशं प्रणमामि पुनः पुनः।।' ऊँ कम्बलाय नमः, कम्बलमा0 स्था0 पू0।

(ऐशान्यां)'विप्रवर्ग श्वेतवर्ण सहस्रफणसंयुतम्। आवाहयाम्यहं देवं शेषं वै विश्वरूपिणम्।।' ऊँ शेषाय नमः, शेषमा0 स्था0 पू0।

अथ मूलमंत्रेणावाहनार्थं मूलमंत्रस्य जपं कुर्यात् – 'अस्य सर्पमूलमंत्रस्य वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, नागराजो देवता, सां बींज, सीं कीलकं, सौः शक्तिः, सर्पदेवताप्रीत्यर्थे विनियोगः।' अथ करन्यासः– 'ऊँ वं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ऊँ चं तर्जनीभ्यां नमः, ऊँ भ्रं मध्यमाभ्यां नमः, ऊँ वें अनामिकाभ्यां नमः, ऊँ नं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ऊँ मं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।'

एवं हृदयाद्यंगन्यासं कुर्यात्। ततः

'ऊँ वचभ्रुवे नमः' इति मंत्रस्य अष्टोत्तरशतं जपेत्। 'ऊँ भूर्भुवःस्वः अनन्तादि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवनाग देवता: सुप्रतिष्ठिता भवन्तु, सुप्रसन्ना भवन्तु, सम्मुखा भवन्तु, वरदा भवन्तु न:।

अथ राहु-कालयो: पुरुषसूक्तेन वाऽन्यमंत्रै: षोडशोपचारपूजनं कृत्वा नवनागानां षोडशोपचारपूजनं कुर्यात्। तदित्थं - तत्रादौ

आवाहनं- भजेऽहं दोषशान्त्यर्थं पूजये कार्यसाधकं। आगच्छ नागराजाख्यो दोषं मम निवारय।। एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वन्दितपादपद्म। नानाफणामण्डलराजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। ऊँ भूर्भुव:स्व: सपत्नीक नवनागदेवताभ्यो नम:, युष्मभ्यं आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनं- नमोऽस्तु कालरूपाय सर्परूप नमोऽस्तु ते। सर्वपापहरो देव आसनं प्रतिगृह्यताम्।। नवकुलाधिपं शेषं शुभ्रकच्छपवाहनं। नानारत्नसमायुक्तं आसनं प्रति गृह्यताम्।। ऊँ भूर्भुव:स्व: सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नम:, युष्मभ्यं आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पाद्यं- नागायानन्तरूपाय शेषरूप नमोऽस्तु ते। सर्वपापहरो देव पाद्यं त्वं प्रतिगृह्यताम्।। अनन्तप्रियशेषं च जगदाधारविग्रहम्। पाद्यं गृहाण भक्त्या त्वं काद्रवेय नमोऽस्तु ते।। ऊँ भूर्भुव:स्व: सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नम:, युष्मभ्यं पादयो: पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं- नमोऽस्तु सर्पराजाय सर्परूप नमोऽस्तु ते। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं अक्षयमुपतिष्ठतु।। काश्यपेयं महाघोरं मुनिभिर्वन्दित प्रभो। अर्घ्यं गृहाण सर्वज्ञ भक्त्या मां फलदायक।। ऊँ भूर्भुव:स्व: सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नम:, युष्मभ्यं हस्तयो: अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं- कर्कोटक महाभाग कालकूटविषप्रभो। कार्दमेय गृहाणेदं शुभमाचमनीयकं।। सहस्रफणरूपेण वसुधाधारक प्रभो। गृहाणाचमनं दिव्यं पावनं च सुशीतलं।। ऊँ भूर्भुव:स्व: सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नम:, युष्मभ्यं आचमनीयं जलं समर्पयामि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचामृतस्नानं- अनन्त शेष सर्वेषां नाथस्त्वं परमो मतः। स्नानं पंचामृतैर्देव गृहाण पापनाशन।। पंचामृतं गृहाणेदं पावनं स्वाभिषेचनं। बलभद्रावतारेश क्षेमं कुरु मम प्रभो।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं- शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतं। समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।। मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभं। तदिदं कल्पितं शेष स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं शुद्धोदकस्नानार्थे जलाभिषेकं समर्पयामि।

वस्त्रं- सहस्रशिरसे तुभ्यं आदिशेषाय ते नमः। वस्त्रं गृहाण नागानामधिपाय नमोऽस्तु ते।। कौशेययुग्मं देवेश प्रीत्या तुभ्यं समर्पितं। पन्नगाधीश नागेन्द्र ताक्ष्यशत्रो नमोऽस्तु ते।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं वस्त्रोपवस्त्रार्थे वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं- ईशयज्ञोपवीताय तक्षकाय महात्मने। उपवीतं प्रदास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे।। सुवर्णनिर्मितं सूत्रं पीतं कण्ठोपहारकं। अनेकारत्नसंयुक्तं सर्पराज नमोऽस्तु ते।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं शालीनतार्थे यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्धं- महापद्म महानाग शंखपाल महीधर। गन्धांश्च कुंकुमोपेतान् गृहाण त्वं तु वासुकि।। कस्तूरीकर्पूरकेसराढ्यं गोरोचनं चागरुरक्तचन्दनं। श्रीचन्दनाढ्यं च दिव्यं गन्धं गृहाण वासुके।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं सुवासार्थे गन्धं समर्पयामि।

अक्षताः- कपिलाय नमस्तुभ्यं कपिलाचलवासिने। अक्षतांस्तुभ्यं दास्यामि अक्षतां चास्तु मे सदा।। काश्मीरपंकजयुतान् शालेयानक्षतान् शुभान्। पातालाधिपते तुभ्यं प्रदत्तांस्त्वं गृहाण प्रभो।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं अक्षतार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पं पुष्पमालां च- कालियाय नमस्तेऽस्तु मणिनागाय ते नमः। पुष्पाणि च

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुगन्धानि पूजार्थ त्वं प्रतिगृह्यतां।। केतकीपाटलजातीचम्पकैर्वकुलादिभिः। मोगरैः कृतमालया पूजितो वरदो भव।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं अलंकारार्थे पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि।

अथ *अंगपूजा* – ऊँ विष्णुपादाश्रयाय सहस्रफणधारिणे नमः–पादौ पूजयामि, आदिशेषाय अनन्ताय नमः–गुल्फौ पू0, विषदन्ताय तक्षकाय नमः–जंघौ पू0, मन्दगतयेऽजगराय नमः–जानुनी पू0, वासुकये महीधराय नमः–ऊरू पू0, कृष्णाय कर्कोटकाय नमः–कटिं पू0, पित्रे शंखपालाय नमः–नाभिं पू0, श्वेताय पद्माय नमः– उदरं पू0, नारायणवाहनाय पद्मनाभाय नमः–हृदयं पू0, गुलिकाय कालियाय नमः–भुजौ पू0, कालकण्ठाय जम्बूकण्ठाय नमः–कण्ठं पू0, अनेकमुखाय द्विजिह्वाय नमः–मुखं पू0, मणिभूषणाय महाविषाय नमः–ललाटं पू0, रक्तनेत्राय महाभागाय नमः–नेत्रे पू0, अनन्तशिरसे शेषाय नमः–शिरसं पू0, अनन्ताय सर्पराजाय नमः– सर्वागानि पूजयामि।

अथावशिष्टोपचाराः–

धूपं– वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तम। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं धूपमाघ्रापयामि।

दीपं– साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण नागेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनाग देवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं– क्षीराज्यगुडसंयुक्तं रंभादिफलमिश्रितं। नैवेद्यं गृह्यतां दिव्यं अनन्ताय नमो नमः।। नैवेद्यं गृह्यतां देव क्षीराज्यदधिमिश्रितं। नानापक्वान्नसंयुक्तं पायसं शर्करायुतं।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं नैवेद्यं निवेदयामि।

फलं– इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं फलं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निवेदयामि। ताम्बूलं पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतं। एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

द्रव्यदक्षिणा- हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदं अन्तः शान्तिं प्रयच्छ मे।। न्यूनातिरिक्तपूजायां संपूर्णफलहेतवे। दक्षिणां कांचनीं देव स्थापयामि तवाग्रतः।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं कृताया पूजाया साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनं- कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं तु प्रदीपितं। आरार्तिक्यमहं कुर्वे गृहाण वरदो भव।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं आरार्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पांजलिः- ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त.... , नाना सुगन्धि पुष्पाणि ....।। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।।

अथ राहु-काल-सर्पाणां विशेषप्रार्थनाकवचस्तोत्रादिपाठं कुर्यात्।।

तत्रादौ राहुप्रार्थना -

कायहीनो महाशक्तिर्ग्रसते शशिभास्करौ।
सिंहिकेयो महावीर्यो राहुः प्रीतो भवेन्मम।1।
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी।2।

किरीटिनं करालवदनं खड्गचर्मशूलधरं सिंहासनस्थं पूर्वदेशजं आंगीरसमार्ष अनुष्टुप्छन्दसं कृष्णाम्बरधरं कृष्णाभरणभूषितं कृष्णगन्धानुलेपनं कृष्णध्वजछत्र पताकिनं मुकुटकेयूरमणिशोभितमारुह्य रथं दिव्यं मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वाणं ग्रहमण्डले प्रविष्टमधिदेवताकालसहितं प्रत्यधिदेवतासर्पसहितं दक्षिणाभिमुखं राहुं सदा नमाम्यहम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ राहुकवचं - अस्य श्रीराहुकवचस्तोत्रमहामंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, राहुर्देवता, राहुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः। ऊँ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ऊँ रीं तर्जनीभ्यां नमः, ऊँ रूं मध्यमाभ्यां नमः, ऊँ रैं अनामिकाभ्यां नमः, ऊँ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ऊँ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः - इति करन्यासः। एवं हृदयादिन्यासः कर्तव्यः। ऊँ भूर्भुवस्स्वरोमिति दिग्बन्धः।

प्रणमामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरीटिनं।
सैंहिकेयं करालास्यं भक्तानामभयप्रदं।1।
राहुं चतुर्भुजं चर्मखड्गशूल वरांकितम्।
कृष्णमाल्यांबरधरं कृष्णगन्धानुलेपिनम्।2।
गोमेधकविभूषं च विचित्रमुकुटोज्वलम्।
कृष्णसिंहस्थमायान्तं मेरुं चैव प्रदक्षिणम्।3।
नीलाम्बरो शिरः पातु ललाटं लोकवन्दितः।
चक्षुषी पातु मे राहुः श्रोत्रे त्वर्धशरीरवान्।4।
नासिकां मे करालास्यः शूलपाणिर्मुखं मम।
जिह्वां मे सिंहिकासूनुः कंठं मे कष्टनाशनः।5।
भुजंगेशो भुजौ पातु नीलमाल्यः करौ मम।
पातु वक्षः तपोमूर्तिः पातु कुक्षिं विधुंतुदः।6।
कटिं मे विकटः पायादूरू मे सुरपूजितः।
स्वर्भानुर्जानुनी पातु जंघे मे पातु जाड्यहा।7।
गुल्फौ ग्रहाधिपः पातु नीलचन्दनभूषितः।
पादौ नीलांबरः पातु सर्वांगं सिंहिकासुतः।8।
प्रातः भुजंगमः पातु संगवे सिंहिकासुतः।
मध्याह्ने पातु मां राहुः सायं सप्ताश्वमर्दनः।9।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रदोषे पन्नगः पायादर्धरात्रेऽर्धविग्रहः।

सुरारिः सर्वदा पायाद्दुर्गान्मां दानवोऽवतु।10।

राहोरिदं कवचमीप्सितदायकं यः, भक्त्या पठेदनुदिनं नियतान्तरात्मा।
प्राप्नोति कीर्तिममलं समृद्धिमिष्टामारोग्यमायुरतुलं विरुजं शरीरं।11।

इति श्रीपद्मपुराणस्थराहुकवचं संपूर्ण।

अथ राहुस्तोत्रं –

राहुर्दानवमंत्री च सिंहिकाचित्तनंदनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चंद्रातीत्यमर्दनः।1।
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषकः।2।
कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकंठहृदयाश्रयः।
विधुंतुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः।3।
ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।
पंचविंशति नामानि स्मृत्या राहुं सदा नरः।4।
यः पठेत् महती पीडा तस्य नश्यति निश्चितं।
आरोग्यं पुत्रमतुलं श्रियं धान्यं पशून्तथा ।5।
ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमं।
सततं पठतं यस्तु जीवेत् वर्शशतं नरः।6।

इति स्कन्दपुराणस्थराहुस्तोत्रं संपूर्ण।

अथ पुष्पार्चनं – ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः ऊँ भूर्भुवःस्वः । ऊँ कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्टया वृता। ऊँ स्वः भुवः भूः ऊँ भ्रौं भ्रीं भ्रां ऊँ नमः।1। ऊँ ह्रीं अर्धकायं महावीर्य चंद्रादित्यविमर्दनं। सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहं।2। ऊँ राहवे नमः।3। इति मंत्रत्रयेण पुष्पाणि समर्पयित्वा विशेषार्घ्य दद्यात् – **राहुग्रहः सदाक्रूरः सोमसूर्यस्य पीडकः।**

शान्त्यर्थं तु मया दत्तोऽर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कालप्रार्थना – यमो निहन्ता पिता धर्मराजो वैवस्वतो दंडधरश्च कालः। प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतांत एतद् दशभिर्जपन्तः।1। धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिप ते नमः। रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय।2।

अथ पुष्पार्चनं– ऊँ श्री यमाय नमः, ऊँ श्री निहन्त्रे नमः, ऊँ श्री पित्रे नमः, ऊँ श्री धर्मराजाय नमः, ऊँ श्री वैवस्वताय नमः, ऊँ श्री दंडधराय नमः, ऊँ श्री कालाय नमः, ऊँ श्री प्रेताधिपाय नमः, ऊँ श्री दत्तकृपानुसारिणे नमः, ऊँ श्रीकृतान्ताय नमः।

अथ सर्पप्रार्थना –(इसमें जहाँ-जहाँ 'कालिय' शब्द है वहाँ-वहाँ यजमान के जन्मकुण्डलि में दिृष्ट कालसर्पयोग का नाम को जोडकर प्रार्थना करें।)

कालियो **नाम नागोऽसौ कृष्णस्य पादपांशुना।**
रक्षा तार्क्ष्येण संप्राप्तः सोऽभयं ददातु नः।1।
कालियो **नाम नागोऽसौ विषरूपो भयंकरः।**
नारायणेन संपुष्टो सदा शं विदधातु नः।2।
कालियो **नाम नागोऽयं ज्ञातो सर्वै महाबली।**
अभयं प्राप्तं कृष्णेन निर्भयो विचरत्यहि।3।
सो *कालिय* **स्वदोषाच्च निर्भयं कुरु मां सदा।**
अनेन पूजनेनाथ प्रीतो सुखकरो भवेत्।4।
बलिं प्राप्य स्वकीयां हि चाशिषं मे प्रयच्छतु।
कालसर्पस्य दोषोऽयं शान्तो भवतु सर्वथा।5।
तृप्तो नागः प्रयच्छं मे धनधान्यादिसम्पदः।
जले विहर त्वं नाग मां हि शान्ति प्रदो भव।6।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ सर्पसूक्तम् (नवनागस्तोत्रम्)

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः।

नमोऽस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नः सन्तु मे सदा।1।

विष्णुलोके ये सर्पाः वासुकीप्रमुखाश्च ये। नमोऽस्तु0।2।

रुद्रलोके च ये सर्पाः तक्षकप्रमुखास्तथा। नमोऽस्तु0।3।

खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्गं ये च समाश्रिताः। नमोऽस्तु0।4।

सर्पसत्रे च ये सर्पाः आस्तिकेन रक्षिताः। नमोऽस्तु0।5।

प्रलये चैव ये सर्पाः कर्कोटकप्रमुखाश्च ये। नमोऽस्तु0।6।

धर्मलोके च ये सर्पाः वैतरण्यां समाश्रिताः। नमोऽस्तु0।7।

ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः। नमोऽस्तु0 ।8।

ग्रामे वा यदि वाऽरण्ये ये सर्पाः प्रसरन्ति हि। नमोऽस्तु0।9।

पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बिलसंस्थिताः। नमोऽस्तु0।10।

रसातले च ये सर्पा अनन्ताद्या महाबलाः। नमोऽस्तु0।11।

अथ नवनागनामस्तोत्रम् – अनंतं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलं। शंखपालं धार्तराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।1। एतानि नवनामानि नागानां च महात्मनां। सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः।2। तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।3।

अथ पुष्पार्चनं – ऊँ श्री अनन्ताय नमः, ऊँ श्री वासुकये नमः, ऊँ श्री शेषाय नमः, ऊँ श्री पद्मनाभाय नमः, ऊँ श्री कम्बलाय नमः, ऊँ श्री शंखपालाय नमः, ऊँ श्री धार्तराष्ट्राय नमः, ऊँ श्री तक्षकाय नमः, ऊँ श्रीकालियाय नमः। ऊँ नवकुलाय विद्महे विषदन्ताय धीमहि। तन्नः सर्पः प्रचोदयात्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुष्पाणि समर्प्य कृतपूजां समर्पयेत् - एतैत सर्पाः शिवकण्ठभूषा लोकोपकाराय भुवं वहन्तः। भूतैः समेता मणिभूषितांगाः गृहणीत पूजां परमां नमो वः।1। कल्याणरूपं फणिराजमग्र्यं नानाफणामण्डलराजमानम्। भक्त्यैकगम्यं जनताशरण्यं यजाम्यहं नः स्वकुलाभि वृद्ध्यै।2। अनया पूजया अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितराहुः प्रीयताम् न मम।।

ततः होमः कर्तव्यः। पंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं कृत्वा बलवर्धननामाग्निं संपूज्य कुशकंडिका आघाराज्यभागौ च हुत्वा अग्न्यर्चनपूर्वकवराहुतिं दत्त्वा आवाहितदेवतानां चतुर्थ्यन्तनाम्ना स्वाहान्तेन जुहुयात्। (तत्र षोडशमातृकानां 17आहुतयः, सप्तघृतमातृकानां 7आ, पंचऊँकाराः 5आ, ग्रहहोम 9आ, ग्रहाणामधिदेवतानां 9आ, ग्रहाणां प्रत्यधिदेवतानां 9आ, क्षेत्रपालानां 51आ, नक्षत्राणां 28आ, योगानां 27आ, पंचलोकपालानां 7आ, दशदिक्पालानां 10आ, इत्यादयः)। ततः प्रधानहोमः - राहोः वैदिकमंत्रेणाष्टोत्तरशतं आहुतिं हुत्वाऽधिदेवतायाः कालस्य दशनामप्रकृतिकैः चतुर्थ्यन्तैः स्वाहाशिरस्कैः दश आहुतिं दत्त्वा 'ऊँ ह्रीं तत्कारिणी विषहारिणी विषरूपिणी विषं इन इन्द्रस्य वज्रेण नमः स्वाहा' इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतं जुहुयात्। ततः सर्पनामभिः, सर्पगायत्र्या (यथाशक्ति), सर्पसूक्तेन च होमं कृत्वा ततो व्याहृतिहोमः, प्रायश्चित्तहोमः, स्विष्टकृच्च कुर्यात्। ततो घृतपात्रतिलपात्रयोर्दानम्, नागेभ्यः क्षीरबलिदानम्, आरार्तिक्यं, मंत्रपुष्पांजलिं च कृत्वा

प्रदक्षिणां कुर्यात्- ये तीर्थानि....। यानि कानि....। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं प्रदक्षिणां समर्पयामि।

नमस्कारः- नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं नमस्कारान् समर्पयामि।

क्षमायाचना- अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षम्यतां परमेश्वर।1। ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि कृतसर्पवधो मया। पूर्वजन्मनि वाऽस्मिन् च तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि।2। मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनमहीश्वर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे ।3। करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।4। आवाहनं न जानामि.... ।5। यदक्षरं पदं भ्रष्टं.... ।6। ऊँ भूर्भुवःस्वः सपत्नीकनवनागदेवताभ्यो नमः, युष्मभ्यं क्षमायाचनापूर्वकं साष्टांगप्रणिपातं समर्पयामि।। ततो देवताविसर्जनम्, अग्न्युद्वासश्चान्ते कृत्वा कर्मसंपूर्णतावचनम् कुर्यात्। कलशजलेन प्रोक्षणं दक्षिणादानं चेत्याद्युत्तरतंत्रं (उत्तरांगभूतकर्म) कृत्वा शान्तिकर्म समापयेत्।। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वाऽनुकृतस्वभावात्। करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणेति समर्पये तत्।1। प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणाद्देव तद्विष्णो सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः।2। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।3।

विशेष सूचना :-

1. दूसरे पृष्ठ में जहां यह ' चिह्न है वहां नवनागवेदी का चित्र के अनुसार एक पीठ पर आटा आदि से वेदी को बनायें।

2. इस कालसर्पयोग शान्ति कर्म में प्रयुक्त समस्त तांबे और चांदी के नागों को ''सर्पप्रार्थना'' खण्ड में जो 11 मंत्र ऊपर लिखें हैं उनका उच्चारण करते हुए बहते पानी में प्रवाहित करें। नहाकर शुभ्रवस्त्र पहनें। तत्पश्चात् गरुडभगवान् का दर्शन करें और पूजा अर्चना करें।

अतिरिक्त सूचना :-

1. बगलामुखीसाधना - मुद्रणाधन है।

2. भगवद्गीता शांकरभाष्य, शंकरानन्दीटीका और टिप्पणसहित - मुद्रणाधीन है।

।।हरि ऊँ तत्सत्।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रमांक	प्रकाशित पुस्तकों की सूची	मूल्य
1	शिवपूजापद्धतिप्रकाशः	मुफ्त
2	पूर्णयोग (योगपंचदशी)	175
3	सर्वदर्शनसारः	175
4	श्रीचक्रपूजापद्धतिप्रकाशः (पूर्णिका सहित)	300
5	वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः	120
6	शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम्	120
7	दुर्गापूजापद्धतिप्रकाशः	250
8	दुर्गाहोमविधिः	250
9	उणादिकोशः	30
10	शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम् (मूलमात्रम्)	मुफ्त
11	शिव-शक्तिमहिम्नःस्तोत्रम् (मूलमात्रम्)	मुफ्त
13	An Advatik View of Kantian Thoughts	560
12	Holistic Yoga	220
14	Wisdom of Yoga	मुफ्त
15	लघुसिद्धान्तकौमुदी टिप्पणसंग्रहः	30
16	तर्कसंग्रहः टिप्पणसंग्रहः	20
17	अर्थसंग्रहः टिप्पणसंग्रहः	20
18	अनुभूत अनुष्ठान प्रकाशः	300
19	भागवतपीयूषबिन्दुः	300
20	यतिदण्डैश्वर्यविधानम् (2 खण्ड)	1000
21	कालसर्पयोगविधिः	50

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh